प्रिय अभ्यार्थी,

→ आपको कंटेंट की बेहतर समझ है।

→ सभी उत्तरों में अच्छा विश्लेषण तथा उदाहरणों का सटीक प्रयोग किया है।

→ विवरण को और अधिक प्रभावी बनाने के लिए —

(i) आलोचकों तथा समीक्षकों के कथनों पर विशेष ध्यान दें।

(ii) कुछ उत्तरों में बड़े पैराग्राफ के माध्यम से विवरण लिखा है। इसे छोटे-छोटे पैरा में तोड़कर लिखें।

आप इसी तरह मेहनत जारी रखें। भविष्य के लिए शुभकामनाएँ।

Q. 'दिव्या' 'इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।" इस कथन के आधार पर 'दिव्या' उपन्यास में इतिहास और कल्पना के समन्वय का विवेचन कीजिए।

भूमिका में अच्छा विश्लेषण है

'दिव्या' के प्राक्कथन में यशपाल ने स्पष्ट लिखा है- "दिव्या इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है।" लेखक ने काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण का रंग दिया है, न कि ऐतिहासिक चित्र में कल्पना का रंग।

विवरण ठीक है

ऐतिहासिक वातावरण निर्मित करने के लिए यशपाल ने कुछ ऐतिहासिक चरित्रों एवं स्थलों का प्रयोग किया है। इनका विवरण निम्न है —

- पुष्यमित्र, मिलिंद, बृहद्रथ, पतंजलि केवल प्रतीक रूप में उपस्थित हैं। ये चरित्र इतिहास की नहीं, ऐतिहासिक वातावरण की सृष्टि करते हैं एवं गौण चरित्र।
- साकल, मथुरा, सियालकोट जैसे स्थानों का प्रयोग इतिहास की परिस्थितियाँ दिखाने के लिए किया गया। साकल तथा मथुरा बुद्ध के केंद्र के रूप में।
- ऐतिहासिक वातावरण बनाए रखने के लिए ऐतिहासिक सौंदर्य के अनुकूल भाषा का प्रयोग। जैसे - महाश्रेष्ठी, निष्क आदि।

'दिव्या' के प्रमुख चरित्र काल्पनिक हैं (दिव्या, माणिक) तथा प्रायः सभी घटनाएँ भी सृजनशील हैं। इस प्रकार, 'दिव्या' में इतिहास का प्रयोग तथ्यों के स्तर पर बहुत कम है। यशपाल प्राक्कथन में लिखते हैं — "इतिहास विश्वास की नहीं, विश्लेषण की वस्तु है। इतिहास मनुष्य का अपनी परंपरा में आत्मविश्लेषण है।"

Good

6/10

Q. "महाभोज' उपन्यास राजनीतिक विकृतियों का सच्चा दस्तावेज है।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं, तर्कसंगत मीमांसा कीजिए।

महाभोज की मूल समस्या राजनीतिक विकृति है। इस उपन्यास में मन्नू भंडारी ने आपातकाल के बाद के भारतीय राजनीतिक परिदृश्य का प्रामाणिक चित्रण किया है।

इस उपन्यास में भारतीय राजनीति में व्याप्त भीड़तंत्र, अवसरवादिता, भ्रष्टाचार, दिखावटी नेतृत्व, आदि दल-बदल, जनता के प्रति संवेदनहीनता, अपराधियों का संरक्षण, नौकरशाही पर अत्यधिक दबाव जैसी विद्रूपताओं को उभारा गया है।

दा साहब, सुकुल बाबू, लोचन भैया, राव, चौधरी, अप्पा साहेब और लखनसिंह जैसे राजनीतिक चरित्रों के माध्यम से लेखिका ने उस समय के जटिल राजनीतिक यथार्थ को बखूबी प्रस्तुत किया है।

उदाहरण के लिए, राजनीति की संवेदनहीन अवसरवादिता निम्न कथन से स्पष्ट है—

"ज्योतिष पर अनंत विश्वास है सुकुल बाबू को। ××× बिसू की मौत लगता है जैसे थाली में परोसकर मौका आ गया उनके पास।"

लोचन भैया जैसे लोग, जिनमें अभी भी कुछ आदर्शवाद बाकी है, इस राजनीतिक धक्का-मुक्की के शिकार हुए हैं और अंततः सोच रहे हैं—

"इसी क्रांति का सपना देखा था? और क्या इसी कुर्सीचेपन की सौदेबाज़ी के लिए मंत्रिमंडल गिराने की बात सोच रहे हैं वो? नाम, चेहरे, लेबल भले ही अलग-अलग हों, पर अलगाव है कहाँ — सुकुल बाबू… दा साहब… राव… चौधरी।"

सटीक विश्लेषण है

good

इस प्रकार, 'महाभोज' राजनीतिक विकृतियों का सच्चा दस्तावेज है जिसमें राजनीतिक यथार्थ का सूक्ष्म अंकन हुआ है।

100 d

Q. 'महाभोज' की मूल संवेदना को स्पष्ट कीजिए।

मन्नू भंडारी नवलेखन के दौर की प्रसिद्ध रचनाकार है जो मनोवैज्ञानिक विषयों पर लिखने के लिए विख्यात रही है। उन्होंने 'महाभोज' में राजनीतिक और सामाजिक विद्रूपताओं पर व्यंग्य किया है। उनके अनुसार हमारा परिवेश ही हमारे व्यक्तित्व और नियति को निर्धारित करता है —

"जब घर में आग लगी हो तो सिर्फ अपने अंतर्जगत में बने रहना या उसी का प्रकाशन करना क्या खुद ही अप्रासंगिक, हास्यास्पद और किसी हद तक अश्लील नहीं लगने लगता।"

महाभोज मूलतः राजनीतिक उपन्यास है इसलिए केन्द्रीय संवेदना के तौर पर राजनीतिक विकृतियों का पर्दा फाश किया गया है। दा साहब, सुकुल बाबू, लोचन भैया, लखनसिंह, राव और चौधरी के माध्यम से राजनीति में व्याप्त विद्रूपताएँ दल बदल, भ्रष्टाचार, जनता के प्रति संवेदनहीनता, दिखावे की राजनीति आदि को उभारा गया है।

यह सामाजिक जीवन की कुरूपताओं पर भी विचार करती हैं। जैसे — जातीय संघर्ष और गाँव-शहर का द्वंद्व। 1973 का 'बेलछी कांड' जिसमें उच्च वर्ग के कुछ लोगों ने कुछ हरिजनों को जला दिया। जिस तरह नागार्जुन ने 'हरिजन गाथा' कविता में इस घटना को पृष्ठभूमि बनाया; वैसे ही मन्नू भंडारी ने उपन्यास के शुरुआत में इस बात का संकेत दिया है —

"महीने चार पहले की तो बात है—
गाँव के सरहद से ज़रा परे हटकर
जो हरिजन टोला है, वहाँ कुछ झोपड़ियों
में आग लगा दी गई थी,
आदमियों सहित।"

लेखिका का मानना है यदि समाज में कुछ गलत है तो उसके पीछे एक सीमा तक बुद्धिजीवियों का दायित्व भी है लेकिन उपन्यास में दत्ता बाबू जैसे पत्रकार अखबार का कोटा बढ़वाने के लिए बिकु गए हैं तो महेश जैसे रिसर्चर में निर्जीव किस्म की तटस्थता है। बिम्ब के माध्यम से लेखिका ने ऐसे कर्महीन बुद्धिजीवियों पर गहरी चोट की है—

"केवल नाराज़ ही नहीं, लड़ता था
बाकायदा हमसे कि आप जैसे पढ़े-
लिखे लोग खाली तमाशबीन ही
बनकर बैठे रहेंगे तो इन गरीबों
की लड़ाई कौन लड़ेगा?"

लेखिका ने उपरोक्त समस्याओं के प्रति समाधान पक्ष का संकेत भी प्रस्तुत किया है। अंत में मि. सक्सेना का व्यक्तिबोधरण— "खतरनाक लपकती अग्निलीक के लिए जो बिन्दु और बिंदा तक ही नहीं रुकी रहती।"

Q. कुछ आलोचकों की राय है कि गोदान में व्यक्त होने वाला यथार्थवाद मार्क्सवाद से प्रेरित समाजवादी यथार्थवाद है। आप इस बात से कहाँ तक सहमत हैं? युक्तियुक्त विवेचन कीजिए।

कुछ आलोचकों की राय है कि गोदान में व्यक्त होने वाला यथार्थवाद मार्क्सवाद से प्रेरित समाजवादी यथार्थवाद है। उनके अनुसार इसका प्रमाण है कि 1936 ई. में 'प्रगतिशील लेखक संघ' के अधिवेशन की अध्यक्षता प्रेमचंद ने की।

गोदान में मार्क्सवाद घोषणा के रूप में नहीं लेकिन मूल्यों के रूप में आया है—

- होरी की मूल समस्या आर्थिक है। प्रेमचंद ने शोषण व दमन पर चोट भी की है।
  होरी – "इस ज़माने में मोटा होना बेहयाई है। सौ को दुबला करके एक मोटा होता है।"
- होरी उस वंचित वर्ग का प्रतीक जो धर्म बिरादरी के नाम पर अपने शोषण को वैध समझता है। (मार्क्सवादी विचारक इसे 'मिथ्या चेतना' कहते हैं)
  होरी की मानसिकता – "अगर ठाकुर या बनिये के रूपये होते तो उसे ज़्यादा चिंता न होती लेकिन ब्राह्मण के रूपये; उसकी एक पाई भी दब गई तो हड्डी तोड़कर निकलेगी।"
- राज्य शोषण का उपकरण है। गोदान में 'सत्तातंत्र' चित्रित है, किस प्रकार गरीब व्यक्ति का दमन करता है। (रामसेवक के वाक्य)
- गोदान की शहरी कथा में भी मार्क्सवाद के अंश दिखाई देते हैं। गोबर के माध्यम से मजदूरों की स्थिति दिखाई गई है।
- ओंकारनाथ जैसे पत्रकार पूंजीपतियों के हाथों बिक गए हैं।
- मेहता - मालती का विवाह न करना। इत्यादि।

कई बिन्दुओं पर मार्क्सवाद का

अतिक्रमण भी हुआ है। जैसे -

- गोबर का कुछ धन कमाते ही सूदखोर हो जाना (वर्ग चेतना के अभाव का लक्षण)
- मालती का विवाह न करना आध्यात्मिक चिंतन से प्रेरित (जो भौतिकवादी विचारधारा के विपरीत है)।

इस प्रकार, 'गोदान' में समाजवाद के थोड़े-बहुत मूल्य चाहे उपस्थित हों लेकिन मार्क्सवाद की अनुकूल प्रस्तुति नहीं है।

Q. 'गोदान' के गोबर की चारित्रिक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

'गोदान' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। प्रेमचंद ने होरी और गोबर जैसे चरित्रों के माध्यम से अपने समय के पीढ़ी संघर्ष को दर्शाया है। यह 'डॉ. रामविलास शर्मा' के कथन से स्पष्ट होता है -

" होरी और गोबर की बातचीत एक पिछड़े हुए किसान और अपने अधिकार को पहचानने वाले आगे बढ़े एक नए किसान की चेतना की टक्कर है।"

गोबर की चारित्रिक विशेषताएँ -

- गोबर आधुनिक विचारधारा का प्रतीक है जिसने औद्योगीकरण, पूंजीवाद, नगरीकरण तथा लोकतंत्र की उभरती हुई दुनिया में आँखें खोली हैं।
- गोबर विद्रोही मानसिकता का युवक है और शोषण के प्रति आक्रामक है।

" गोबर साँवला, लंबा, एकहरा युवक था, जिसे इस काम में रुचि न मालूम होती थी। प्रसन्नता की जगह मुख पर असंतोष और विद्रोह था।"

- गोबर धार्मिक कर्मकांड और मर्यादा से मुक्त है। उसकी दृष्टि में बिरादरी और समाज सब पैसे के सामने निरर्थक व महत्वहीन हैं -

"रुपये हों तो न हुक्का पानी का काम है, न जात बिरादरी का। दुनिया पैसे की है, हुक्का पानी कोई नहीं पूछता।"

- पूँजीवादी और नगरीय संरचना के कारण गोबर का झुकाव एकल परिवार के पक्ष में—

"क्या घर में मेरा हिस्सा नहीं है? अगर झुनिया पर किसी ने हाथ उठाया तो आज महाभारत हो जाएगा।"

- गोबर के अनुसार, आय की अधिकता ही सामाजिक प्रतिष्ठा को जन्म देती है—

"वह अकेला सवा सौ कमायेगा। यही तो लोग कहेंगे कि मजूरी करता है। कहने दो। मजूरी करना कोई पाप तो नहीं है।"

गोबर शहर जाकर परिवार के प्रति गैर-जिम्मेदार भी हो जाता है; पत्नी को लेकर संवेदनहीन हो जाना। शहर में कुछ धन कमाते ही सूदखोर हो जाता है।

इस प्रकार, गोबर सिर्फ अच्छा या बुरा चरित्र नहीं है। प्रेमचंद ने अच्छाईयाँ और बुराईयाँ दोनों दिखाकर सहज मानवीय पात्र बनाया है।

Q. क्या आप इस बात से सहमत हैं कि गोदान एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है? तर्कपुष्ट उत्तर दीजिए।

हाँ, मैं इस मत से सहमत हूँ कि 'गोदान' एक महाकाव्यात्मक उपन्यास है। इसकी महाकाव्यात्मकता का मूल कारण है कि इसमें प्रेमचंद ने 1936 ई. के भारत में उपस्थित रही हर सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक समस्याओं को स्थान दिया है।

<u>गोदान के महाकाव्यत्व का आधार</u>—

- 'गोदान' सीमित स्थान से बंधा हुआ नहीं है अर्थात् अपने पूरे समाज को धारण करती है। प्रेमचंद

लिखते हैं— " सेवासी और बेलासी दोनों अवध प्रांत के गाँव हैं। जिले का नाम बताने की ज़रूरत नहीं।"

- इसमें तत्कालीन भारत की लगभग सभी स्थितियों और समस्याओं का जीवंत चित्रण हुआ है। जैसे— 1930 का तीव्र संक्रमण काल, 1916 से 'ट्रेड यूनियन आंदोलन' शुरू, 1927 में 'अखिल भारतीय महिला सम्मेलन', 1930 ई. के दशक में कृषक आंदोलन आदि।

- प्रेमचंद ने सामाजिक जीवन में धर्म, विश्वासी जैसी समस्याओं के साथ-साथ नारी आंदोलन (सरोज इत्यादि), दलित आंदोलन (सिलिया का परिवार), दहेज समस्या (सोना और रूपा), अनमेल विवाह की समस्या (नोहरी, रूपा) आदि को दिखाया है। इसके साथ आर्थिक समस्याओं गरीबी और ऋण (होरी व अन्य किसान), बेरोज़गारी (शहरी मजदूर) का विस्तृत चित्रण किया है।

- यह तत्कालीन समाज के सभी वर्गों के चरित्रों का एलबम है। अधिकांश चरित्र वर्गगत हैं जो अपने-अपने वर्ग की विशेषताएँ बताते हैं। जैसे— होरी (किसान), दुलारी (साहूकार), दातादीन (धार्मिक आडंबर), झुनिया (वेश्या), रूपा (अनमेल विवाह), खन्ना (पूँजीपति वर्ग), मेहता (बुद्धिजीवी वर्ग), सिलिया (दलित वर्ग), ओंकारनाथ (पत्रकार) आदि।

- गोदान बिम्ब व प्रभाव की दृष्टि से भी महाकाव्यात्मक गुण को धारण करता है। प्रेमचंद ने हिन्दुस्तानी बोलचाल की आम भाषा का प्रयोग किया है जो जनसंख्या के हर वर्ग को समझ आती है।

इस प्रकार, गोदान महाकाव्यत्व के सभी तत्वों को धारण करता है। यही कारण है कि इसे हिन्दी का पहला महाकाव्यात्मक उपन्यास होने का गौरव हासिल है। ग्रामीण जीवन के साथ शहरी जीवन को समेटता हुआ, अपनी संपूर्णता में समस्त भारतीय जीवन का ही महाकाव्य है।

Q: 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये।

किसी रचना का सर्वश्रेष्ठ नाम वह होता है जो लेखक के प्रतिपाद्य को गहराई से व्यक्त करता हो, जो पाठक के भीतर जिज्ञासा उत्पन्न करता हो और यथासंभव संक्षिप्त व सारगर्भित हो। इन्हीं कसौटियों के आधार पर 'गोदान' नामकरण के औचित्य का परीक्षण किया जा सकता है।

शीर्षक की सार्थकता के कारण

- पूरी रचना गाय पर केंद्रित है। गाय वह प्रतीक है जिसके माध्यम से एक साधारण किसान के जीवन की आर्थिक-सामाजिक त्रासदी को व्यक्त किया गया है। प्रेमचंद कहते हैं-
  "हर सभ्य गृहस्थ की भाँति होरी के मन में भी गऊ की लालसा चिरकाल से संचित चली आ रही थी।"

- यह गाय की महत्वाकांक्षा की त्रासदी है। अपनी मृत्यु को आसन्न देखकर होरी का कथन है-
  "मेरा कहा सुना माफ करना धनिया! अब जाता हूँ। गाय की लालसा मन में ही रह गई।"

- कृषक जीवन के आर्थिक और सामाजिक संदर्भ में। जैसे -
  "गऊ से ही तो द्वार की शोभा है।" (सामाजिक इच्छा)

- दोहरी त्रासदी का चित्रण :
  - जिन्दगी भर गाय के लिए संघर्ष।
  - मृत्यु के बाद भी धर्म, बिरादरी पीछा नहीं छोड़ते।

- 'गोदान' के माध्यम से होरी-सी विद्रोह चेतना को दर्शाया गया है। जैसे-
  धनिया बोली - "महाराज, घर में न गाय है, न बछिया, न पैसा। यही पैसे हैं, यही इनका गो-दान है।"

इस प्रकार गोदान का कथानक गाय की आकांक्षा से शुरू हो कर 'गो-दान' की विडंबनापूर्ण मांग पर समाप्त होता है। रचना के अंत में गो-दान की प्रथा होरी की त्रासदी को और गहरा बनाती है। अतः यही इस उपन्यास का सर्वाधिक उपयुक्त नाम है।